अमृत वाणी

जीवन में कोई चीज इतनी हानिकारक और खतरनाक नहीं जितना डाँवाँडोल स्थिति में रहना।

-सुभाषचंद्र बोस,

अपने ही अपनों के दुश्मन

हमारे देश में पंचायती राज की स्थापना के पीछे मुख्य उद्देश्य यही था कि गांवों की व्यवस्था की जिम्मेदारी वहां के लोगों को सौंपी जाये ताकि वे ग्रामीणों की बेहतरी के बारे में अधिक अच्छे से सोच विचार एवं कार्य कर सके। यही वजह है कि गांव गांव में पंचायतों के स्थापना की गई। उनके पदाधिकारियों का चयन ग्रामीणों के मध्य से किया जा कर उन्हें तमाम प्रशासकीय एवं वित्तीय अधिकार सौंपे गये ताकि वे ग्रामीणों के हित में निर्णय लेकर ईमानदारी से उनका क्रियान्वयन कर सके लेकिनसमय बीतने के साथ ग्रामीण क्षेत्रों से पंचायतों द्वारा ग्रामीणों के हित रक्षा के विपरीत उनके शोषण की जो खबरें आने लगी है उससे पंचायत राज के मूल उद्देश्य और आदर्शों पर ही सवालिया निशान लगने लगा है। जगह-जगह से कई पंचायतों के खिलाफ ऐसी शिकायतें आ रही है जहां शासन की जनहितकारी योजनाओं के क्रियान्वयन के साथ भी न्याय नहीं किया गया है। फलस्वरूप ग्रामीणों को उनका लाभ मिलने के बजाय प्रतिकूल हालातों का सामना करना पड़ता है।

उदाहरण के लिए शासन की महती योजना मनरेगा को देखें। इस योजना का मुख्य उद्देश्य ग्रामीणों के पास खेती किसानी का कार्य नहीं होने के दौरान उन्हें वैकल्पिक रोजगार उपलब्ध कराना है। मनरेगा के अंतर्गत गांव में ही विकास कार्य संचालित कर ग्रामीणों को रोजगार उपलब्ध कराये जाने का प्रावधान है जिससे एक तो ग्रामीणों को आर्थिक सहारा मिले और दूसरा जो और महत्वपूर्ण है वह यह कि मजबूरी में रोजगार तलाशने ग्रामीणों को अन्यत्र पलायन नहीं करना पड़े लेकिन प्रायः विभिन्न क्षेत्रों के पंचायतों से ऐसी शिकायतें मिलती रहती है कि या तो वहां समय पर मनरेगा के कार्य शुरू नहीं कराये जाते या फिर वहां कार्य करने वाले को समय पर मजदूरी का भुगतान नहीं किया जाता जिससे ग्रामीण महीनों वर्षों तक भटकते रहते हैं तथा पलायन का क्रम भी नहीं थम रहा है।

काम कराने के बाद मजदूरी भुगतान नहीं कराने के पीछे प्रायः यही पाया जाता है कि पंचायत प्रतिनिधि आपसी सांठगांठ कर मजदूरी की रकम हड़प लेते हैं और अलग अलग बहाने बना कर मजदूरों को घुमाया जाता है।

हाल ही में जनपद पंचायत बकावंड के ग्राम पंचायत लावागांव से ऐसे ही शर्मनाक कृत्य की कहानी प्रकाश में आई है। इस ग्राम पंचायत में तीन वर्ष पूर्व मनरेगा के तहत भूमि मरम्मत कार्य ग्रामीणों से कराया गया था लेकिन भूमि मरम्मत के लिए गोदी खोदने वाले मजदूरों को आज तक मजदूरी का भुगतान नहीं किया गया। जैसा कि बताया गया है पंचायत के सरपंच और सचिव ने मिलकर मजदूरी की पूरी रकम का आहरण करने के पश्चात बंदरबांट कर लिया जबकि मजदूर दर-दर भटकने विवश है।

ऐसी स्थिति एक मात्र पंचायत में ही नहीं बल्कि अनेक पंचायत से सुनने को मिलती है। गांवों में आवश्यक विकास कार्य नहीं होना, शासन की जनहितकारी योजनाओं के उचित क्रियान्वयन का अभाव, घटिया निर्माण कार्य एवं ग्रामीणों को उनके हक की मजदूरी का भुगतान नहीं कर उनका शोषण करना जैसी शिकायतें आम है अर्थात अपने ही अपनों के दुश्मन साबित होने लगे हैं।

श्रीलंका के आतंकी विस्फोटों से जुड़े सवाल

श्रीलंका के इस खूनी मंजर में ईस्टर के अवसर पर एक धर्म विशेष के लोगों को निशाना बनाया गया। चर्च और ऐसे होटलों पर हमले किए गए, जहां धर्म विशेष के लोगों का जमघट था। वे धार्मिक कार्य के लिए जुटे थे, खुशी मना रहे थे, आपस में मिल-जुल रहे थे, लेकिन आतंकियों को यह पसंद नहीं आया। उनकी शैतानी एवं उन्मादी मानसिकता की जितनी निंदा की जाए, कम है। जाहिर है, इन हमलों से पूरी दुनिया में मातम और चिंता का माहौल है। तमाम देशों के राष्ट्राध्यक्ष और नेता इन हमलों की कड़े शब्दों में यथोचित निंदा कर रहे हैं। ये हमले मानवता पर ठीक उसी तरह से हमला हैं, जैसे हाल ही में न्यूजीलैंड में मस्जिद पर हुआ हमला था। दोनों ही जगह धार्मिक कृत्य में लगे लोगों को निशाना बनाया गया है। हिंसा की यह बढ़ती प्रवृत्ति बेहद खतरनाक है।

क्या हो गया है इन तथाकथित हिंसक एवं आतंकवादी लोगों को, जो हिंसा एवं आतंक का रूप बदल-बदल कर अपना करतब दिखाते रहते हैं- विनाश और निर्दोष लोगों की हत्या करते रहते हैं। निर्दोषों को मारना कोई मुश्किल नहीं। कोई वीरता नहीं। पर निर्दोष तब मरते हैं जब पूरी मानवता घायल होती है। यह दर्द एवं पीड़ा केवल श्रीलंका की नहीं है, बल्कि शांतिप्रिय दुनिया के तमाम देशों की है। उन खूनी हाथों का जिम्मेदारी लेना, समूची दुनिया की बड़ी शक्तियों के सम्मुख एक बड़ी चुनौती है, अगर समय पर इन आतंकवादी लोगों और संगठनों को करारा जबाव नहीं दिया गया, उनको नियंत्रित नहीं किया गया तो उन खूनी हाथों में फिर खुजली आने लगेगी। दुनिया के तमाम देशों को संगठित होकर इस काम में पूरी शक्ति और कौशल लगाना होगा। आदमखोरों की मांद तक जाना होगा। अन्यथा हमारी खोजी एजेंसियों की काबिलीयत पर प्रश्नचिन्ह लग जाएगा कि कोई दो-चार व्यक्ति कभी भी श्रीलंका, भारत, न्यूजीलैंड जैसे देशों की शांति और जन-जीवन को अस्त-व्यस्त कर सकते हैं। कोई भी उन्मादी उद्योग, व्यापार ठप्प कर सकते हैं। कोई भी किसी भी देश की शासन प्रणाली को गूंगी बना सकते हैं।

श्रीलंका के लिए तो यह और भी दुखद है क्योंकि इस देश ने सिंहली, बौद्ध, तमिल तनाव को लगभग दो दशक तक झेला है। यह तो पूरी दुनिया के लिए खुशखबरी थी कि श्रीलंका हिंसा के दुखद और शर्मनाक दौर से निकल आया था। दस वर्ष पहले तमिलों के अतिवादी संगठन लिट्टे के खात्मे के बाद शांति और स्थिरता की ओर बढ़ रहा श्रीलंका जिस तरह के भीषण आतंकी हमले से दो-चार हुआ वह इस छोटे से देश के साथ पूरी दुनिया के लिए बेहद खौफनाक है एवं बड़ी चुनौती है। ताजा हमलों ने श्रीलंका के दामन पर फिर दाग लगा दिए हैं, फिर से वहां की शांति एवं अमन पर ग्रहण लग गया है। इस अलग तरह की उन्मादी एवं अंधी हिंसा को समझना होगा क्योंकि इसमें अलग तरह की नस्लीय या सांप्रदायिक घृणा के संकेत मिल रहे हैं। ये संकेत श्रीलंका ही नहीं, बल्कि दक्षिण एशिया व दुनिया के लिए भी सोचनीय है।

श्रीलंका के ताजे विस्फोट यह बताते हैं कि ये हमले किसी बड़ी सुनियोजित साजिश का हिस्सा थे। अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों से भरे रहने वाले होटलों के साथ जिस तरह चर्चों को खासतौर पर निशाना बनाया गया उससे यह साफहै कि आतंकी ईसाई समुदाय के लोगों को निशाना बनाना चाह रहे थे। इसीलिए चर्चों में तब विस्फोट किए गए जब वहां ईस्टर की विशेष प्रार्थना हो रही थी। अतीत में श्रीलंका के सिंहली बौद्धों का तमिलों और मुसलमानों से तो टकराव रहा है, लेकिन अल्प संख्या वाले ईसाई समुदाय का किसी अन्य समुदाय के साथ कोई बड़ा तनाव नहीं रहा। सवाल है कि इन हमलों एवं विस्फोटों के लिये आखिर श्रीलंका को क्यों चुना गया। यह देश अंतरराष्ट्रीय राजनीति के केंद्र में होने के बजाय बीते कुछ समय से अपनी ही राजनीतिक उठापटक से त्रस्त है। कहीं ऐसा तो नहीं कि इसी उठापटक का फायदा किसी नए-पुराने अतिवादी समूह ने उठा लिया? जो भी हो, यह एक हकीकत है कि जब किसी देश में शासन व्यवस्था सुदृढ़ न हो और राजनीतिक अस्थिरता का अंदेशा हो तो अराजक, अतिवादी और आतंकी ताकतों को सिर उठाने का मौका मिलता है। लेकिन बड़ा सवाल यह भी है कि जीने के अधिकार पर प्रश्नचिन्ह आखिर कब तक लगता रहेगा? कैसी विडम्बना सम्पूर्ण मानवता के अस्तित्व को नकारने पर तूली है, यह कैसा त्रासद एवं डरावना दौर है जिसमें अब युद्ध मैदानों में सैनिकों से नहीं, भीतरघात करके, निर्दोषों की हत्या कर लड़ा जाता है। सीने पर वार नहीं, पीठ में छुरा मारकर लड़ा जाता है। इसका मुकाबला हर स्तर पर हम एक होकर और सजग रहकर ही कर सकते हैं। यह भी तय है कि बिना किसी की गद्दारी के ऐसा संभव नहीं होता है। भारत में विशेषतः कश्मीर में हम बराबर देख रहे हैं कि प्रलोभन देकर कितनों को गुमराह किया गया और किया जा रहा है। पर यह जो घटना हुई है इसका विकराल रूप कई संकेत दे रहा है, उसको समझना है। कई सवाल खड़े कर रहा है, जिसका उत्तर देना है। इसने नागरिकों के संविधान प्रदत्त जीने के अधिकार पर भी प्रश्नचिन्ह लगा दिया। यह बड़ा षड़यंत्र है इसलिए इसका फैलाव भी बड़ा हो सकता है।

श्रीलंका अपनी शांति और मनोरतमा के लिये नई इबारत लिख ही रहा था कि वहां हुए सिलसिलेवार शक्तिशाली बम विस्फोटों एवं धमाकों के खौफनाक एवं त्रासद दृश्यों ने सम्पूर्ण मानवता को लहुलूहान कर दिया, आहत कर दिया और दहला दिया। कैसी उन्मादी आंधी पसरी कि 200 से अधिक लोगों का जीवन ही समाप्त कर दिया। हजारों गंभीर रूप से घायल हो गए तथा करोड़ों रुपये की सम्पत्ति नष्ट हो गई। इस प्रकार यह विस्फोटों की शृंखला, अमानवीय कृत्य अनेक सवाल पैदा कर रहे हैं। ऐसा लग रहा है कि कुछ उन्मादी लोगों के उन्माद में न जिन्दगी सुरक्षित है और न ही जीवन-मूल्यों की विरासत। आखिर कब रूकेगा हिंसा, आतंक एवं त्रासदी का यह खूनी खेल। इस तरह के हिंसा, भय, आतंक, अन्याय एवं अमानवीयता के घृणित कर्मों ने यह भी साबित कर दिया कि आदमी के मन में पाप का भय रहा ही नहीं।

आतंकवाद अब किसी एक देश की समस्या नहीं रही है, श्रीलंका न्यूजीलैंड के बाद सबसे भयानक हमले का शिकार बना है। न्यूजीलैंड के मुकाबले श्रीलंका में चार गुना ज्यादा लोग मारे गए हैं। घायलों की संख्या भी कहीं अधिक है।

श्रीलंका को दहलाने वाले आतंकी हमले भारत के लिए भी चिंता का कारण हैं, क्योंकि एक तो ये ऐसे पड़ोसी देश में हुए जहां हमारे हित निहित हैं और दूसरे ये हमले 1993 में मुंबई में हुए सिलसिलेवार बम धमाकों की याद दिला रहे हैं। विडंबना यह है कि तब से लेकर आज तक विश्व समुदाय आतंकवाद की परिभाषा भी तय नहीं कर पाया है, न ही आतंकवाद से लड़ने का कोई सशक्त माध्यम तय किया गया है। लहूलुहान श्रीलंका एक बार फिर यह बता रहा है कि आतंकवाद मानवता के लिए सबसे बड़ा खतरा बना हुआ है। केवल इतना ही पर्याप्त नहीं कि पूरी दुनिया अपने पैरों पर खड़े होने की कोशिश कर रहे श्रीलंका को दिलासा और सहारा दे, बल्कि यह भी देखे कि किस्म-किस्म के आतंकवाद से कैसे निपटा जाए? ऐसा करते समय इस पर भी ध्यान देना होगा कि आतंकवाद से लड़ाई के तौर-तरीके सफल कम हो रहे हैं, अतिवाद को हवा अधिक दे रहे हैं। यह अतिवाद शांति और सहिष्णुता की बलि लेने के साथ विभिन्न जाति, समुदाय एवं धर्मों के बीच अविश्वास बढ़ा रहा है। त्रासदी यह है कि ऐसे समय भी चीन जैसे देश पाकिस्तान में पल रहे आतंकी सरगना की ढाल बनना पसंद कर रहे हैं। विस्फोट करने वालों और उनके संगठनों को करारा जबाव देने का वक्त है। भारत ने इसकी पहल गतदिनों की, जिसका समूची दुनिया में स्वागत हुआ। एक बार फिर वैसी ही जबावी कार्रवाही जरूरी है। ऐसा नहीं हुआ तो आतंकवादी लोगों का श्रीलंका में किसी न किसी बहाने हिंसा का कारोबार चलता रहेगा, निर्दोष लोगों का खून बहता रहेगा।

ललित गर्ग

(ये लेखक के अपने विचार है)

राज-काज

तेज अर्थात् घर का भेदी

एक पुरानी कहावत है कि घर का भेदी लंका ढाए। यह कहावत इस समय लालू प्रसाद यादव के परिवार के लिए फिट बैठ रही है। दरअसल लालू यादव और उनके परिवार के लिए उनके ही बागी बेटे तेज प्रताप चुनौती बने हुए हैं। तेज के बागी तेवर और क्रियाकलाप राष्ट्रीय जनता दल के लिए इस चुनाव में खतरे की घंटी माने जा रहे हैं। तेज पर पार्टी द्वारा कार्रवाई नहीं करने की लाचारी भी अब साफ साफनजर आने लग गई है। इस पर विरोधी क्या राजद के ही नेता अब तो सवाल उठाते दिख रहे हैं। पार्टी में दोहरा मापदंड भी देखने को मिल रहा है, इसका पूरा लाभ विरोधी खेमा लेगा और समझा जा रहा है कि राजद बेकफुट पर चली जाएगी। इस संबंध में राजद से बगावत करके मधुबनी से बसपा के टिकट पर चुनाव लड़ रहे पूर्व केंद्रीय मंत्री अली अशरफ फातमी सवाल कर रहे हैं कि जिस जुर्म में अन्य नेताओं पर कार्रवाई की गई है, उसी जुर्म में तेज पर अब तक मेहरबानी क्यों है इसलिए लालू सामने नहीं होते हुए भी चारों ओर से घिरत नजर आ रहे हैं।

जमानत पर कौन नहीं

चुनाव प्रचार के दौरान भाजपा लगातार कहती आई है कि जमानत पर रिहा लोग चुनाव प्रचार करते फिर रहे हैं। दरअसल इसके बहाने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा ने कांग्रेस नेतृत्व पर निशाना साधने की कोशिश की है, लेकिन अब जबकि मध्य प्रदेश की भोपाल लोकसभा सीट से मालेगांव मामले की आरोपी साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर को बतौर प्रत्याशी चुनाव मैदान में उतारा गया है तो वो खुद भी बैकफुट पर जाती दिख रही है। ऐसे में साध्वी प्रज्ञा ने खुद अपना बचाव करते हुए मुख्यमंत्री कमलनाथ पर आरोप लगाया कि दिल्ली में 1984 में हुए सिख दंगों के लिए दोषी मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री बने बैठे हैं। इस प्रकार एक जमानत पर रिहा दूसरे पर कीचड़ उछालने का काम कर रहा है, जिससे मतदाता भी भ्रमित है कि आखिर इस चुनाव में वो अपना प्रतिनिधि किसे चुने, क्योंकि सांपनाथ और नागनाथ ही तो चारों ओर नजर आ रहे हैं।

राजनैतिक पार्टियों के मुखपत्र और नेता मुंहफट

एक सास को जब बहु को उलाहना या डांटना होता हैं तो वह अपनी बेटी के माध्यम से उलाहना देती हैं, जैसे इतनी बड़ी हो गयी हो ये काम नहीं आता, ससुराल में जाकर मायके की नाक कटवाएंगी। इसी प्रकार हर राजनीतिक पार्टी अपनी भड़ास निकालने एक मुख पत्र निकालता हैं और उसके माध्यम से अपनी जो भी उलटी सीधी बात कहना चाहते हैं कह देते हैं पर उसमे एक पंक्ति लिख दी जाती हैं इसमें संपादक का कोई अधिकार नहीं हैं, ये लेखक के निजी विचार हैं। इसी प्रकार हर पार्टी अपने यहाँ कुछ मुंहफट नेता, प्रवक्ता रखते हैं जिनको विवादित ब्यान देने की पूरी छूट होती हैं और उन पर पार्टी प्रमुख का वरदहस्त रहता हैं, पार्टी अपनी बात उन नेताओं के माध्यम से बोलते हैं और ये निजी ब्यान होता है और पार्टी को इससे कोई सम्बन्ध नहीं हैं।

कांग्रेस पार्टी में जैसे दिग्विजय सिंह, मणिशंकर अय्यर, शशि थरूर आदि तो बी जी पी योगीए नकवी, सुषमा, कुछ साध्वियां, गिरिराजसिंह आदि आदि रखे जाते हैं जिनके माध्यम से पार्टी अपनी भड़ास के साथ जो बात कहना चाहती हैं कह देती हैं और पार्टी कोई भी कार्यवाही करने में असमर्थ होती हैं या नहीं करती।

इस मामले में हमारे प्रधान मंत्री भी कम नहीं हैं, वे भी कभी कभी नीचता की उच्चता पर पहुँच जाते हैं और फिर सामान्य बात की मिडिया ने बात को तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत किया या गलत तरीके से प्रस्तुत किया। यदि हाल सब पार्टियों में एक प्रचलन में हैं।

भोपाल में बी जी पी से लड़ रही पढ़ी लिखी मूर्ख प्रत्याशी को यह नहीं मालूम की उन्हें क्या कहना चाहिए या नहीं कहना चाहिए। वे साध्वी के भेष में राक्षस है जैसे पढ़ा लिखा व्यक्ति साक्षर होता हैं और उसके विपरीत राक्षस होता हैं। उन्होंने अपनी पीड़ा जिस स्तर और प्रकार से व्यक्त की तो उनसे क्या अपेक्षा की जा सकेगी की वे संसद में अपने मुंहफट व्यान देकर संसद को नहीं चलने देंगी, उनमे सहानुभूति की बाढ़ के कारण प्रभुता पाए मद जो आये। यह एक सामान्य प्रक्रिया हैं जब कोई भी आरोपी बनता हैं तो उससे रहस्य उगलवाने कोई भी सरकार की पुलिस हो वह अपने हथकंडे अपनाती हैं। यदि आरोपी सहयोग देता हैं तो उसके प्रति सहानुभूति रखी जाती हैं और जो असहयोग करते हैं तब उनके साथ नियमानुसार कार्यवाही की जाती हैं।

आज साध्वी के जो व्यान हैं वे सब आफ्टर थाट हैं और सहानुभूति बटोरने के लिए हैं, जब तक अंतिम निर्यण नहीं आ जाता तब तक आरोपी की श्रेणी में मानी जाएंगी, वैसे उन्हें चुनाव के लिए अपात्र माना जाना चाहिए। पर नियम हमारे देश में व्यक्ति, उसके प्रभाव, सम्पन्नता पर निर्भर करते हैं।

थूंक कर चाटना साहित्य में विभस्त रस कहलाता हैं और राजनीती में शृंगार कहते हैं। अपराधी वृत्ति के सोच अपराधी होती हैं, विगत दस वर्षों से उसी वातावरण में रहने से उनकी वृत्ति अपराधी हैं, उन्होंने अपने आपको बचाने साध्वी का बाना बनाकर बचाव का साधन बना लिया, अपराधी को समाज से बचने के लिए या तो साधु बन जाओ या डाकू बन जाओ। साधु के वेश में हजारों साधु अपराध करके बचे रहते हैं।

जिनका जीवन अपराध मय होता हैं वे सामाजिक राजनैतिक पारिवारिक जीवन से दूर होते हैं वे मात्र स्वार्थ वृत्ति के होते हैं और उनमे जिव्हा लम्पट होने से विवादित होना जरुरी हैं जिनसे वे चर्चित रहे। अब देश का मतदाता उतना मुर्ख नहीं रहा जितना समझा जाता हैं। साध्वी के ब्यान ने उनकी वृत्ति स्वाभाव को उजागर कर दिया, क्या श्राप देना या उसे देश द्रोही उनको उचित हैं। इससे लगता हैं की उनकी योग्यता भी संदेह जनक हैं।

ये मुंहफट और अपराधी वृत्ति के लोगों का संसद में जाना उचित नहीं हैं और इसके अलावा बी जे पी क रणनीति हैं की इनको हरवा दो जिससे उनकी भविष्य की दखलंदाज़ी दूर हो जाएँगी, समय के अनुसार उनकी जेल होना निश्चित हैं। एकबार सांसद बनने के बाढ़ जीवन पर अपराधों से बचने का कवचमन्त्र मिल जायेगा। और सरकारी दामाद होने से सब सुविधाएँ अपने आप मिलेंगी।

सुनिश्चित अपराधी से बचाना या बचना जरुरी हैं। वर्तमान में अपराधी हैं भविष्य में क्या होगा किसी को नहीं मालूम पर वर्तमान तो वे आरोपी हैं और जमानत पर हैं। ऐसे लोगों को चुनाव में मतदान न करना यह जनता का निर्णय होना चाहिए।

डॉ. अरविन्द जैन

(ये लेखक के अपने विचार है)

धर्म इति धारयति

धर्म का अर्थ होता है धारण करना,अर्थात् जिसे धारण किया जा सके वह धर्म है।धर्म कर्म प्रधान होता है। वास्तव में गुणों को जो प्रदर्शित करे वह धर्म है। धर्म को गुण भी कह सकते हैं। यहाँ उल्लेखनीय है कि धर्म शब्द में गुण अर्थ केवल मानव से संबंधित नहीं है, पदार्थ के लिए भी धर्म शब्द प्रयुक्त होता है। यथा पानी का धर्म है बहना, अग्नि का धर्म है प्रकाश व उष्मा देना और संपर्क में आने वाली वस्तु को जलाना। व्यापकता के दृष्टिकोण से धर्म को गुण कहना सजीव, निर्जीव दोनों के अर्थ में नितांत ही उपयुक्त है। धर्म सार्वभौमिक होता है। पदार्थ हो या मानव, पूरी पृथ्वी के किसी भी कोने में बैठे मानव या पदार्थ का धर्म एक ही होता है। उसके देश, रंग रूप की कोई बाधा नहीं है। धर्म सार्वकालिक होता है यानि कि प्रत्येक काल में युग में धर्म का स्वरूप वही रहता है। धर्म कभी बदलता नहीं है। उदाहरण के लिए पानी, अग्नि आदि पदार्थ का धर्म सृष्टि निर्माण से आज पर्यन्त समान है। धर्म और सम्प्रदाय में मूलभूत अंतर है। धर्म का अर्थ जब गुण और जीवन में धारण करने योग्य होता है तो वह प्रत्येक मानव के लिए समान होना चाहिए। जब पदार्थ का धर्म सार्वभौमिक है तो मानव जाति के लिए भी तो इसकी सार्वभौमिकता होनी चाहिए। अतः मानव के सन्दर्भ में धर्म की बात करें तो वह केवल मानव धर्म है। वैदिक काल में ष्धर्मष् शब्द एक प्रमुख विचार प्रतीत नहीं होता है। यह ऋग्वेद में धर्म शब्द प्रयोग में आया है पर अल्प रूप में।राजा अशोक के काल में धर्म शब्द ने प्रमुखता प्राप्त की थी। पांच सौ वर्षों के बाद, ग्रंथों का समूह सामूहिक रूप से धर्म.शास्त्रों के रूप में जाना जाता था, जहां धर्म सामाजिक दायित्वों के साथ समान था, जो व्यवसाय वर्ण धर्म जीवन स्तर आश्रम धर्म, व्यक्तित्व सेवा धर्म पर आधारित थे। राजत्व राज धर्म, स्त्री धर्म और मोक्ष धर्म।

हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, जैन या बौद्ध आदि धर्म न होकर सम्प्रदाय या समुदाय मात्र हैं। सम्प्रदाय एक परम्परा के मानने वालों का समूह है। ऐसा माना जाता है कि धर्म इंसान को अच्छाई के मार्ग पर लेकर जाता है।

पालि धम्म भारतीय संस्कृति और दर्शन की प्रमुख संकल्पना है। धर्म शब्द का पश्चिमी भाषाओं में कोई तुल्य शब्द पाना बहुत कठिन है। साधारण शब्दों में धर्म के बहुत से अर्थ हैं जिनमें से कुछ ये हैं कर्तव्य, अहिंसा, न्याय, सदाचरण, सद्.गुण आदि।

सभी धर्मों में प्रकाश तक पहुंचने की भिन्न स्थिति है। धर्मों में देवता महात्मा के सिर के पीछे प्रकाश वलय है। हिन्दू त्रिदेव के सिरों के पीछे भीी प्रकाश वलय है जैनधर्म में तीर्थंकर के पीछे भी प्रकाश वलय है। बौध्द में बुध्द, सिख में गुरूनानक आदि के सिरों के पीछे। वलय है। जबकि कुछ धर्मों में भिन्न है। यहूदी में आग का दिया या फिर तारा है। क्रिश्चियन में पवित्र आत्मा के रूप में और मरीयम यशु गॉड फादर के सिर के पीछे है। मुस्लिम में ईद का चांद और तारा है। पारसी में आग का दिया सिर के पीछे है। अर्थात जो प्रकाश की कल्पना होती है, वही मनुष्य को स्वयं की चेतना अनुसार परमात्मा या महात्मा में दिखाई देती है। यही प्रकाश ही परम् सत्य का आधार है। इसे वेदों में ब्रम्ह कहा गया है जिसको जानने की कोशिश में हम लगे रहते हैं।विज्ञान के सिध्दान्त का बिंग बैंग का शुरूवाती प्रकाश बिन्दु है जिससे विश्व की उत्पत्ति हुई है।

धर्म की उत्पत्ति....

पूर्वी धर्म हिन्दू धर्म है, जिसके स्वरूप ब्रम्हा,विष्णु और महेश हैं।उनकी उत्पत्ति के बाद सतयुग ,त्रेतायुग द्वापरयुग व कलयुग आये। जैन धर्म ऋषभनाथ की विचारधारा से आया। बौध्द धर्म बुध्द की विचारधारा से और झेन धर्म बोधीधर्मा की विचारधारा से और सिख धर्म गुरूनानक की विचारधारा से आया।

हिन्दू धर्म में ही जन्मे महात्मा ऋषभनाथ, बुध्द बोधिधर्मा व गुरूनानक हैं। ये सब पीढ़ दर पीढ़ी विचारधारायें हैं । इसी प्रकार कन्फ्यूशी धर्म कन्यफूशियस की विचारधारा है। जबकि वास्तव में

विज्ञान के सिध्दान्त वैज्ञानिकों के सिध्दान्त हैं ,जो भौतिक तत्वों के विश्लेषण पर आधारित हैं। पश्चिमी धर्मों की स्थापना किसी दूसरे की मान्यता का विरोध कर स्वयं के विचार को स्थापित किया गया है।

वास्तव में, विभिन्न पंथ हमें भिन्न कर्मकाडों व पूजा पध्दतियों का मार्ग दिखाते हैं, पर धर्म का जो मूल स्वरूप है वह सदाचार, परोपकार, मानवता, करुणा ,सहिष्णुता व सद्भाव में निहित है। पर विडंबना यही कि लोग पंथ सम्प्रदाय को ही धर्म समझते हैं, और सदाचरण को विस्मृत कर बैठे हैं। जबकि हक़ीक़त यह है कि धर्म का तो अर्थ ही है किए धर्म इति धारयति अर्थात् धर्म वह है जिसे धारण किया जाए। वैसे भी धर्म इंसान को इंसान से जोड़ता है, जो तोड़े, वो कैसा धर्म जो इंसान को उदार बनाता है, वही सच्चा धर्म है।

प्रो. शरद नारायण खरे

(ये लेखक के अपने विचार है)